रजिस्ट्रेशन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– Kanpur City – 67/2015–2017

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

यह केवल आप के लिये

आइरिस विज्ञान की एक मात्र पुस्तक
Iris Diagnosis
136 Page की यह बहुमूल्य पुस्तक बेहतरीन छपाई व मज़बूत बाइडिंग में नेट मूल्य पर उपलब्ध है
नहीं लिया तो पछतायेंगे
सम्पर्क करें
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक केन्द्र
127/204 एस जूही,
कानपुर–208014

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014

वर्ष –39 ● अंक –3 ● कानपुर 1 से 15 फरवरी 2017 ● प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी ● वार्षिक मूल्य – ₹ 100

आगामी सत्र से प्रारम्भ होगा नया पाठ्यक्रम

- जुलाई से लागू होगा नया पाठ्यक्रम
- अवधि पर निर्णय लाम्बित
- विषयों की अब हो जायेगी वृद्धि
- मान्यता के अनुरुप मानक
- विषय विशेषज्ञों से ली जा रही है राय
- बोर्ड ने लिया साहसिक फैसला
- पद्धति को मिलेगी नई दिशा

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों की भांति स्थान प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि हमारी चिकित्सा पद्धति का पाठ्यक्रम भी अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के पाठ्यक्रम से यदि ज़्यादा न हो पाये तो उससे कम भी न हो।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 इस विषय पर निरन्तर गंभीर है और उस पर काम भी हो रहा है, नये पाठ्यक्रम की आवश्यकता, उसकी गुणवत्ता व अवधियों के संबन्ध में संशोधन बहुत आवश्यक हो गया है इसलिये इस बिन्दु पर शीघ्र निर्णय लेने की आवश्यकता थी इसलिये बोर्ड ऑफइलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने इस विषय पर निर्णय लेने हेतु एक विशेषज्ञ टीम का गठन किया था, तीन माह तक निरन्तर कार्य करने के उपरान्त विशेषज्ञ टीम ने अपनी रिर्पोट बोर्ड को सौंप दी है। रिपोर्ट के आते ही बोर्ड ने युद्ध स्तर पर इस क्षेत्र में कार्य करना प्रारम्भ भी कर दिया है। बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रमों का उच्चीकरण किया जायेगा इस आशय के समाचार गज़ट में भी समय–समय पर प्रकाशित होते रहे हैं जिससे कि परिवर्तन को लोग आसानी से स्वीकार कर लें। पाठ्यक्रम में संशोधन की आवश्यकता क्यों आ पड़ी ?इस विषय पर हम काफी सामग्री पूर्व ही में समय–समय पर पाठकों तक पहुँचाते रहे हैं।

अब जब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को शासकीय अधिकारिता प्राप्त हो चुकी है और पाँच वर्षों का लम्बा समय भी पूर्ण हो चुका है, इस पाँच साल की अवधि में बोर्ड ने शासन द्वारा जारी शासकीय आदेश का पूर्ण रुप से अनुपालन कराने हेतु हर कदम पूरा कर लिया है अब मात्र शासकीय परिषद का काम शेष है परन्तु शासकीय परिषद बनने के पहले हमें इलेक्ट्रो होम्योपैथी के कोर्सों को अन्य मान्यता प्राप्त प्रचलित पद्धतियों के समान लाना है इस हेतु इस क्षेत्र पर भी कार्य किया जा रहा है चूँकि अन्य मान्यता प्राप्त पद्धतियों में डिग्री कोर्स संचालित हो रहे हैं और डिग्री केवल विश्वविद्यालय द्वारा ही प्रदान की जा सकती है वर्तमान में उ0प्र0 शासन द्वारा बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 को प्रदेश में शिक्षा व्यवस्था सुचारु रुप से संचालित करने का अधिकार प्रदान किया गया है।

बोर्ड द्वारा निश्चित अर्हता लेने के उपरान्त बोर्ड से पंजीकरण कराकर ही विधि सम्मत चिकित्सक के रुप में चिकित्सा व्यवसाय किया जा सकता है क्योंकि किसी को अभी तक विश्व विद्यालय स्तर की मान्यता प्राप्त नहीं है इस कारण बोर्ड द्वारा डिग्री स्तर का पाठ्यक्रम ही संचालित किया जा रहा है। जैसे ही शासन से इस विषय की सूचना हमें प्राप्त हुयी बोर्ड ने जनहित में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया, पाठकों को एक बात बता दें कि उ0प्र0 राज्य में बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ही एक मात्र संस्था है जिसे प्रदेश स्तर पर कार्य करने का सरकारी आदेश व अनुमति प्राप्त है, पाठ्यक्रमों का बदलाव, उसकी अवधि, उसमें समाहित विषय पर विस्तृत चर्चा 20 जनवरी, 2017 को हुयी जिसमें विभिन्न बिन्दुओं पर गहन चर्चा की गयी, इस विषय पर जानकारी देते हुये बोर्ड के प्रवक्ता डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई ने बताया कि मीटिंग में विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा हुयी और लगभग निर्णय भी हो गया है कि आने वाले सत्र से नवीन पाठ्यक्रम को लागू कर दिया जायेगा, कोर्स का नामकरण भी हो चुका है उसपर विधिक राय भी ली जा चुकी है एवं यथा शीघ्र इस इस नवीन कोर्स के नाम की सूचना शासन को भी प्रेषित की जायेगी।

अवधि के विषय पर डा0 बाजपेई ने कहा कि न्यूनतम अवधि 4 वर्ष की हो या 4 1/2 वर्ष की इस पर पाठ्यक्रम निर्धारण समिति गंभीरता से विचार कर रही है एक या दो मीटिंगों के बाद परिणाम सामने आ जायेगा, जैसे ही अंतिम परिणाम आया सभी को उचित माध्यम से सूचित किया जायेगा, विषयों के बारे में डा0 बाजपेई ने बताया कि समानता के लिये यह आवश्यक हो गया था कि विषयों में बढोत्तरी की जाये संभवतः तीन या चार नये विषय जोड़े जा रहे हैं परन्तु अंतिम निर्णय तो पाठ्यक्रम समीति ही लेगी। हाँ ! इतना ज़रुर है कि *Anatomy* व *Physiology* विषय दो वर्ष पढ़ाये जा सकते हैं *Physiology* के साथ *Biochemistry* समाहित किये जाने का भी विचार चल रहा है डा0 बाजपेई ने बताया कि बदले परिवेश में पाठ्यक्रमों का संचालन कैसे होना है इस हेतु शीघ्र ही बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 से सम्बद्ध इन्टीटयूटों की एक महत्वपूर्ण बैठक आहूत की जायेगी और उनसे कहा जायेगा कि पाठ्यक्रम के अनुरुप अपने– अपने विद्यालयों में विषय विशेषज्ञों की व्यवस्था करें डा0 बाजपेई ने कहा कि इस सत्र से बोर्ड एक कठोर निर्णय लेने जा रहा है,वह है कोर्स की फीस से संबन्धित। बोर्ड द्वारा निर्धारित फीस से कम कोई भी इन्सटीटयूट फीस कम नहीं ले सकता है जिससे कि स्तर बना रहे। वर्तमान समय में जो व्यवस्थायें चल रही हैं उसके अनुसार चलते हुये सभी संस्थानों को अपने आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये संसाधनों की स्वंय ही व्यवस्था करनी होती है अस्तु इस विषय में गंभीरता से निर्णय लिया जायेगा,वर्तमान व्यवस्थाओं को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि शीघ्र ही इस विषय पर निर्णय लिया जाये यह आवश्यक इसलिए भी है क्योंकि धीरे–धीरे सरकार का नियन्त्रण बढ़ता जा रहा है और सरकारी दायरे में आने के लिए हमें उसी स्तर का बनना होगा, एक बात और भी स्पष्ट कर दें कि नया पाठ्यक्रम लागू तो होगा परन्तु पूराने पाठ्यक्रम A.C.E.H., F.M.E.H., व M.B.E.H. पूर्व की भांति संचालित होते रहेंगे। इसलिए विद्यालय संचालको को ग्रमित होने की आवश्यकता नहीं है समय की मांग के अनुसार संशोधन करने ही पड़ते हैं, जो संशोधन हो रहा है वह समय की मांग के साथ साथ आवश्यकता भी है क्योंकि मान्यता की बाट हम कब तक जोटेंगे। मान्यता में बड़े पेंच हैं इसलिए सीधे–सीधे परिषद बनवाने का प्रयास हो रहा है, Sowa Rigpa की भाँति इलेक्ट्रो होम्योपैथी को भी स्थापित करवाने का प्रयास प्रारम्भ कर दिया गया है। धीरे–धीरे प्रयास रंग लायेगा और वर्षों से जो चिकित्सक कुछ नये होने की आस लगाये बैठे हैं उनकी आशायें पूरी होंगी, हम यह कभी नहीं भूलते कि भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता सम्बन्धित प्रकरण को यह कह कर विराम लगा दिया था कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का पाठ्यक्रम अभी बहुत कम स्तर का है, अब जब बात चल निकली है तो यह आवश्यक हो गया है कि पाठ्यक्रम की कमी न रहे और सरकार पाठ्यक्रम को मुद्दा बनाकर आसानी से बच निकले इसलिए तमाम बिन्दुओं पर विचार करने के बाद ही बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने पाठ्यक्रम पर गम्भीरता से विचार किया और यह निर्णय ले लिया कि मान्यता के लिए आवश्यक स्तर जुटाने हेतु पाठ्यक्रम में संशोधन किया जाये इस संशोधन के लिए प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों के पाठ्यक्रमों का सघनता से अध्ययन किया गया तदोपरान्त पाठ्यक्रम समिति को यह विषय सौपा गया। समिति ने संसाधनों और व्यवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए ऐसा पाठ्यक्रम बनाया है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की सभी ज़रुरतें पूरी करता है।

शासकीय परिषद गठित होने की सम्भावनायें बढ़ीं

प्रदेश में विधि सम्मत ढंग से चिकित्सा व्यवसाय करने के लिए यह आवश्यक है कि अपनी पद्धति में आवश्यक अर्हता के साथ अपनी परिषद में पंजीकरण कराकर स्थानीय स्तर के विभागीय अधिकारी के यहाँ पंजीकरण कराना आवश्यक होता है। कुछ माह पहले तक सभी चिकित्सकों को स्थानीय स्तर पर पंजीकरण कराने हेतु जनपद के मुख्यचिकित्साधिकारी के कार्यालय में पंजीकरण का आवेदन करना होता था परन्तु व्यवस्थाओं में परिवर्तन हुआ और परिवर्तित व्यवस्था के अनुसार आयुर्वेदिक, यूनानी चिकित्सकों का पंजीकरण होमीय आयुर्वेदिक अधिकारी, होम्योपैथी चिकित्सकों का पंजीकरण होम्योपैथी अधिकारी और जनपद का मुख्य चिकित्साधिकारी सिर्फ एलोपैथी चिकित्सकों का पंजीकरण करेगा। चूंकि चिकित्सा विभाग का सबसे सक्षम अधिकारी जनपद स्तर पर मुख्य चिकित्साधिकारी ही होता है अस्तु हमारे चिकित्सक जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी के यहा पंजीयन हेतु आवेदन प्रस्तुत करते हैं। परन्तु बदली हुई परिस्थितियों में कुछ जनपद के मुख्य चिकित्साधिकारी के कार्यालय के बाबू लोग यह स्पष्ट कह देते हैं कि हम सिर्फ ऐलोपैथों का ही पंजीकरण करते हैं ऐसा सुनकर हमारा इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का चिकित्सक परेशान और नर्वस हो जाता है इस कारण वह पंजीकरण कराने से कतराने लगता है।

इस व्यवस्था से निजात पाने के लिए बोर्ड आफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन उ0प्र0 ने सरकार से निवेदन किया कि अधिकार प्राप्त इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों के भविष्य को ध्यान में रखते हुए प्रथक प्रथक इलेक्ट्रो होम्योपैथिक परिषद का गठन किया जावे और तब तक जबतक कि प्रथक व्यवस्था नहीं होती है तबतक जनपद के मुख्यचिकित्साधिकारी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों का पंजीयन आवेदन स्वीकार करें जिससे कि चिकित्सकों को चिकित्सा व्यवसाय करने में किसी भी तरह की परेशानी की सामना न करना पड़े और वह विधि सम्मत ढंग से अधिकार पूर्वक इलेक्ट्रो होम्योपैथिक विधा से चिकित्सा व्यवसाय कर सकें।

बोर्ड के इस प्रतिवेदन पर विभिन्न बिन्दुओं पर व्यापकता से विचार करने के उपरान्त नयी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक परिषद के गठन के लिए कार्य प्रारम्भ होने की जानकारी हुई है हम सब चिकित्सकों की नैतिक जिम्मेदारी है कि अपनी वैधानिकता व अधिकारिता को दर्शाते हुए हम अपने पंजीयन का आवेदन जनपद के मुख्यचिकित्साधिकारी के यहाँ अवश्य कर दें यदि हम ऐसा नहीं करते है तो अधिकारिता के साथ साथ हम अपने वैधानिकता पर भी एक प्रश्नचिन्ह लगा देते है। सरकारी व्यवस्थाओं के निर्माण होने में कई स्तर होते हैं और हर स्तर को पार करने में तमाम सारे अनुकूल और प्रतिकूल प्रश्नों से निपटना पड़ता है। समय भी लगता है तब कहीं जाकर नई व्यवस्था का जन्म होता है। परन्तु जब कोई बीज पड़ जाता है तो उसका अंकुरण भी होता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक परिषद के गठन का बीज पड़ चुका है। निश्चित ही इसपर कोई न कोई सकारात्मक परिणाम अवश्य आयेगा परिणाम की प्रतीक्षा हम सबको रहेंगी परन्तु जबतक परिणाम नहीं आते तब तक हमें प्राप्त अधिकारों का लाभ उठाना होगा और वर्तमान व्यवस्था के अनुरुप ही कार्य करना होगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारे मेहनत रंग लायेगी और शीघ्र ही मेहनत के सापेक्ष परिणाम भी आयेंगे।

परन्तु हमारे चिकित्सकों को परिणाम की प्रतीक्षा तक पंजीयन के विषय को भूल नहीं जाना चाहिये अपितु पंजीकरण को ही मूल विषय बनाकर अपने कर्तव्य का पालन करें और अन्य मान्यता प्राप्त चिकित्सा पद्धतियों के चिकित्सकों की तरह व्यवहार करें।

राजनैतिक पकड़ बनाने की तैयारी

इस समय आधा देश चुनावी चर्चा में व्यस्त है 5 राज्यों में चुनाव की घोषणा हो चुकी है, अगले माह मार्च तक चुनाव पूर्ण हो जायेंगे और परिणामों के आधार पर नई सरकारों का गठन भी हो जायेगा। भारत की सर्वाधिक आबादी वाला प्रदेश, उत्तर प्रदेश भी चुनावी रंग में डूब चुका है इसी से सटे या यूँ कहें कि छोटा भाई "उत्तराखण्ड" राज्य में भी चुनावी बिगुल फूँक चुका है, पंजाब भी चुनावी बुखार में डूबा है सब अपनी अपनी जीत – हार का अनुमान लगा रहे हैं।

हम उ0प्र0 के हैं इसलिये हमारी रुचि उ0प्र0 एवं उत्तराखण्ड के चुनावों पर है क्योंकि इन्हीं राज्यों में बनी सरकारों के फैसले हमारे भविष्य का निर्माण करेंगे, इन सरकारों की सकारात्मक दृष्टि और नीतिगत फैसले इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दिशा और दशा बदलने में काफी सहायक होंगी इलेक्ट्रो होम्योपैथी आन्दोलन को चलते हुये काफी समय गुज़र गया है कुछ सकारात्मक परिणाम भी सामने आये हैं परन्तु अपेक्षित परिणाम अभी भी प्रतीक्षित हैं, कभी – कभी ऐसा प्रतीत होने लगता है और ऐसे – ऐसे परिदृष्य उभर कर सामने आते हैं जो हमें यह सोचने पर विवश कर देते हैं कि हमें जो अपेक्षित परिणाम अभी तक प्राप्त नहीं हुये हैं उसके पीछे राजनैतिक कारण भी हैं।

गुज़रे 70 वर्षों में हम एक भी ऐसा विधायक या सांसद नहीं बना पाये जो इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बात ढंग से उठा सकता, ऐसा नहीं है कि हमें राजनैतिक सहयोग नहीं मिला कुछ ऐसे महत्वपूर्ण नेताओं ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की आवाज़ भी उठाई है जिनका स्तर राष्ट्रीय था और वे हैं कुछ नाम जिनके हम कृतज्ञ हैं उनमें सर्वश्री चन्द्र शेखर त्रिपाठी, स्वर्गीय सत्य प्रकाश मालवीय, स्वर्गीय राजेश पायलट, श्री सिब्बो रज़ी, सुश्री मायावती, श्री राम दास अठावले, स्वर्गीय सोने लाल पटेल, श्री सी0 पी0 ठाकुर, श्री अश्वनी चौबे, श्रीमती रंजीता रन्जन, श्री पप्पू यादव आदि यह कुछ ऐसे नाम हैं जिन्होंने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की आवाज़ को उठाया पर परिणाम अभी भी आशाओं में सांस ले रहा है, पूर्व प्रधानमंत्री द्वय स्वर्गीय विश्वनाथ प्रताप सिंह व चन्द्र शेखर जी इनके हम चिर ऋणी रहेंगे। प्रान्तीय स्तर के नेताओं की एक लम्बी श्रंखला है जिन्होंने समय – समय पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के मंचों की शोभा बढ़ाई है, बड़े – बड़े वादे किये हैं पर परिणाम जहाँ के तहाँ ! जब हम इस पहलू पर गम्भीरता से चिन्तन करते हैं तो यही बात सामने आती है कि आजतक ऐसा कोई राजनैतिज्ञ हमारे लिये नहीं आया जो हमारे दर्द को समझता और हमारी आवाज़ तब तक उठाता रहता जब तक कि उस पर कोई परिणाम नहीं निकलता ! यह एक ऐसा वर्ष है जब कई इलेक्ट्रो होम्योपैथ इस चुनावी समर में लगे हैं, कुछ ऐसे हैं जिनकी स्थिति अभी तक ठीक ठाक नज़र आ रही है, उ0प्र0 से ही चार – पाँच इलेक्ट्रो होम्योपैथ इस चुनाव में अपना भाग्य आज़मा रहे हैं, कोई विधान सभा के लिये तो कोई शिक्षक व स्नातक क्षेत्र से विधान परिषद में घुसने का प्रयास कर रहा है, हारें या जीतें यह अलग बात है ! लेकिन यदि इनमें से कोई जीत गया तो सम्भवतः अपने कार्यकाल में इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर नज़र तो डाल ही लेंगे ऐसा हम सभी का विश्वास होगा, उत्तराखण्ड से भी अपने एक इलेक्ट्रो होम्योपैथ साथी विधान सभा जाने का प्रयास कर रहे हैं सबसे अच्छी बात तो यह है कि इसमें लगभग सभी दल के लोग हैं, उत्तर प्रदेश में हमारे साथी जो चुनाव के मैदान में डटे हैं वे भाजपा, कांग्रेस व एक प्रत्याशी ऐसे भी हैं जो स्वंय के दल से प्रत्याशी हैं एवं वर्तमान में शासक दल के साथ गठबंधन की चर्चा में भी हैं जो भी होगा वह सामने आयेगा हमारी तो बस इतनी ही कामना है कि इन प्रत्याशियों में से कोई भी विजयी हो जाये और वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी को याद रखे ताकि आने वाले वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में जो राजनैतिक खालीपन है वह भरे और हमारी आवाज़ सदन में उठाये।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी कुछ भी भीख में नहीं चाहती है हम तो बस इतना चाहते हैं कि जो अधिकार हमें प्राप्त हैं उनपर गम्भीरता से सरकार विचार करे और उन अधिकारों का हम कैसे उपभोग करें इसकी स्पष्ट विवेचना हो और सरकार द्वारा ऐसे निर्देश जारी किये जायें जिनकी कि अधिकारी अनदेखी न कर सकें और इलेक्ट्रो होम्योपैथी की स्थिति मज़बूत हो।

औषधियों पर चर्चा ज़रुरी

किसी भी चिकित्सा पद्धति की उपयोगिता और स्वीकारिता उसकी औषधियों के आधार पर होती है यदि औषधियां गुणकारी एवं लाभकारी हों तो समाज उनको स्वीकारने में ज़रा भी विलम्ब नहीं करता है औषधियों के गुण एवं दोष के आधार पर ही चिकित्सा पद्धति का मूल्यांकन किया जाता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति में सदा से ही औषधियों के संबन्ध में एक राय रही ही नहीं है जिससे कि विसंगतियां जन्म लेती रहती हैं और इन्हीं सब विसंगतियों के कारण इस चिकित्सा पद्धति का विकास आज तक सही ढंग से नहीं हो पाया है और विकास न हो पाने के कारण इस चिकित्सा पद्धति को जन–जन तक नहीं पहुँचाया जा सका है, यदि कुछ वर्षों पुरानी बात करें तब इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की औषधियों का टोटा रहा करता था, पूरे देश में कुछ ही लोग ऐसे थे जो इस चिकित्सा पद्धति की औषधियों का वितरण किया करते थे ऐसे कहा जाता रहा है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियां इटली/जर्मनी से आयात की जाती थीं फिर इन आयातित औषधियों का पुनर्निर्माण कर चिकित्सकों के मध्य लाया जाता था और तो और इन औषधियों के आयात का लाईसेन्स भी कुछ गिने चुने लोगों के ही पास था, फलस्वरुप इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों में एकाधिकार सा झलकता था इसी एकाधिकार के कारण ही प्रत्येक चिकित्सक तक औषधियां पहुँच ही नहीं पाती थीं जिसका परिणाम यह होता था कि औषधियों की आपूर्ति न होने के कारण चिकित्सक अपनी विधा से परे दूसरी विधा (चिकित्सा पद्धति) में कूद जाता था फलतः चिकित्सा पद्धति का वास्तविक प्रचार व प्रसार नहीं हो पाता था समय ने करवट बदली लोग बदलने लगे और परिणाम यह हुआ कि चिकित्सकों की विश्वसनीयता ही कम होने लगी और जनता इलेक्ट्रो होम्योपैथिक का पूरा लाभ नहीं पा पायी, कटु सत्य तो यह है कि कोई कितना भी प्रचार व प्रसार कर ले पर जब तक वह अपनी उपयोगिता नहीं सिद्ध कर पाता तब तक उसे जन मान्यता नहीं मिलती।

आज परिदृष्य एक दम बदला हुआ है औषधियों की कोई कमी नहीं है, मांग के अनुरुप इसकी पूर्ति भी समय से हो रही है, कुछ लोगों के स्थान पर अब बहुत सारे लोग इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों के निर्माण में अपना हाथ आज़मा रहे हैं, कुछ लोग तो यहाँ तक दावा करने लगे हैं कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जिन 114 पौधों का प्रयोग होता है उनमें अधिकांश पौधे भारतवर्ष में ही पाये जाते हैं और जो पौधे मूल रुप से इस देश में यहां के Climate के हिसाब से उपलब्ध नहीं हैं उनके विकल्प तैयार कर लिये गये हैं और इन्हीं पौधों से औषधि का निर्माण प्रारम्भ भी हो चुका है, औषधि निर्माण के क्षेत्र में मध्य प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, पंजाब, हिमांचल प्रदेश व दिल्ली राज्य काफी सक्रियता से लगे हैं, उ0प्र0 एवं उड़ीसा में भी औषधि निर्माण का कार्य अपने पूरे प्रगति पर है परन्तु कुछ कानूनी अड़चनों के चलते उ0प्र0 में लोगों का रुझान औषधि निर्माण के स्थान पर औषधि विपणण पर ज़्यादा है कुल मिलाकर कार्य पूरे प्रगति पर है। अब कोई भी चिकित्सक यह कदापि नहीं कह सकता है कि हमें औषधियां उपलब्ध नहीं हो रही हैं। सबसे अच्छी बात तो यह है कि उपलब्धता के साथ–साथ चिकित्सकों के पास इस बात का विकल्प भी उपलब्ध है कि वह अपनी मन चाहे कम्पनी के ब्राण्ड प्रयोग में ला सकता है।

प्रायः यह कहा जाता है कि जो दिखता है वही बिकता है इसी उक्ति के आधार पर हमारे औषधि निर्माता अपना पूरा ज़ोर लगाये हैं, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों का स्वरुप और पैकिंग इतना आकर्षक है कि वह कहीं से भी किसी बहुराष्ट्रीय कम्पनी के पैकिंग से कम नहीं दिखती हैं, चिकित्सक घड़ा–घड़ इन औषधियों को प्रयोग में ला रहे हैं और रोगियों को उपलब्ध भी करा रहे हैं, जो आंकड़े बिक्री के हमारे औषधि निर्माता प्रस्तुत करते हैं उससे तो यही उभर कर आता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों की मांग कम नहीं है और औषधियों की इसी मांग के आधार पर हम यह अनुमान लगा लेते हैं कि औषधियां आशानुरुप गुणकारी एवं लाभकारी हैं, क्योंकि यदि औषधि लाभकारी नहीं होगी तो रोगी उसे व्यवहार में ही क्यों लायेगा ?इन सारे प्रश्नों के उत्तर तो चिकित्सक एवं रोगी के पास ही है हम तो मात्र आशा ही कर सकते हैं कि उत्तर सकारात्मक ही होंगे।

यह सभी बातें तो ठीक हैं परन्तु एक बात अवश्य है जो हमारा ध्यान बारम्बार एक ही बिन्दु पर केन्द्रित करती है कि हमारे यह औषधि निर्माता अपने औषधि निर्माण के ढंग को किस प्रकार से वैधानिक ठहरायेंगे ? यह वह यक्ष प्रश्न है जिसका उत्तर औषधि निर्माता के पास उपलब्ध होना चाहिये।

जिस प्रकार से समय चल रहा है और इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति पर शासकीय शिकंजा कसता जा रहा है उस परिस्थिति में हमारे पास हर प्रश्न का सटीक उत्तर होना चाहिये, कल क्या होना है ?किसी को नहीं पता ! परन्तु इसी विचार में रहते हुये यदि हम तनिक भी लापरवाह हो गये तो परिणाम कभी भी विपरीत हो सकते हैं।

लाईसेन्स की प्रक्रिया आज नहीं तो कल लागू तो होनी ही है, सबकुछ ऐसे ही चलता रहे गा यह कदापि सम्भव नहीं है, जब औषधियों के निर्माण और उनका व्यवसाय बढ़ेगा तो निश्चित ही सरकार की निगाहें आप पर भी आकर टिकेंगी उन परिस्थितियों को आज ही ध्यान में रखकर हम कल की बात करें।

किसी को यह नहीं सोचना चाहिये कि कल जो होगा देख लिया जायेगा यह विचार आपके लिये घातक भी हो सकता है सत्य तो यह है कि हमारे अधिकांश औषधि निर्माता फूड के लाईसेन्स के आधार पर औषधियां बना कर बाज़ार में उतार रहे हैं। कुछ निर्माता तो केवल यह लिखकर कि For Development & Promotion से इतिश्री कर लेते हैं। आत्म संतुष्टि के लिये तो यह सब कार्य ठीक–ठाक लगते होंगे परन्तु वैधानिकता के धरातल पर यह शब्द कहीं भी न्यायोचित नहीं है, यह भी सत्य है कि पूरे देश में अभी तक न तो केन्द्र सरकार ने और न ही किसी राज्य सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के औषधियों के निर्माण के लिये कोई निकाय गठित किया है जो इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों के निर्माण के लिये कोई मानक निर्धारित करता या लाईसेन्स की व्यवस्था करता परन्तु इसके अभाव में हमारे साथी कबतक मनमानी करते रहेंगे ? यह तो समय ही बतायेगा, व्यवस्था न होने का मतलब यह नहीं है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों का निर्माण बन्द कर दिया जाये परन्तु जो मनमानी हो रही है उस पर तो लगाम लगनी ही चाहिये अन्यथः परिस्थितियां बदलने में देर नहीं लगे गी। इतने बड़े देश में यदि किसी भी राज्य में किसी औषधि निर्माता पर कानून की निगाह अगर पड़ गयी और उस पर वैधानिकता सिद्ध करने का अवसर दिया गया तब यदि वह निर्माता अपनी औषधि निर्माण से सम्बन्धित वैधानिकता सिद्ध नहीं कर पाया तो जो स्थिति निर्मित होगी उसका प्रभाव पूरे देश पर पड़ सकता है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियां प्रमाणिक हैं और इसके निर्माण की विधि भी वैधानिक स्तर पर प्रमाणित है, जर्मन होम्योपैथिक फार्माकोपिया में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों के निमार्ण की विधि सन्नहित है इस आधार पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियां बनायी जा सकती हैं परन्तु यदि हम किसी नई व्यवस्था को जन्म देंगे तो निसन्देह उसकी प्रमाणिकता भी हमें ही सिद्ध करना पड़ेगा। जहाँ पर अस्तु , किन्तु , परन्तु के लिये कोई स्थान नहीं होगा इसलिये समय रहते हमारे समस्त औषधि निर्माताओं को एक जुट व एक राय होकर किसी ऐसी व्यवस्था का निर्माण करना चाहिये जिसका सभी औषधि निर्माता इमानदारी से पालन करें इस तरह से एक प्रमाणिक व्यवस्था का जन्म होगा जो वैधानिक रुप से मज़बूत हो तथा यदि कोई अड़चन आये तो उसका डटकर मुकाबला भी किया जाये क्योंकि यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को वास्तव में स्थापित करना है तो आगे तो बढ़ना ही पड़ेगा, समय पर सरकार से टकराना भी पड़ेगा क्योंकि भारतसरकार का आदेश हमें काम करने का अधिकार देता है तो उसका उपभोग भी हम ही करेंगे, सरकार आसानी से कुछ देती नहीं है, काम कर के अपनी उपयोगिता सिद्ध कर दो कि सरकारें हिल जायें।

निराशा बहुत गहरी है

मेरे बचपन का
हिन्दुस्तान जिसे मैं ढूँढ़ रहा हूँ !
वह पूरा शेर निशान
जिसे मैं ढूँढ़ रहा हूँ !!

किसी बुजुर्ग कवि की यह पंक्तियां हमें बार–बार यह सोचने पर विवश करती हैं कि समय कितनी तेज़ी से बदलता है और व्यवस्थाओं में भी आनन–फ़ानन आमूल–चूल परिवर्तन हो जाता है। जिस समय कवि ने यह रचना की होगी आज़ादी के पहले का समय रहा होगा और वह उसी समय की तसवीर आज ढूढ़ रहा है जो वर्तमान परिस्थितियों में साकार होती नहीं दिखायी देती हैं। यह उदाहरण इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ इसलिए जोड़ा जा रहा है क्योंकि हमारे साथी अभी भी उसी इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जी रहे हैं जो 40–50 के दशक में थी जब सबकुछ बदला तो हम इलेक्ट्रो होम्योपैथों को भी बदली हुई परिस्थितियों को आत्मसात कर लेना चाहिये, हम सब परेशान इसलिए हैं क्योंकि परिवर्तन की बात तो करते हैं परन्तु परिवर्तन के साथ स्वयं को परिवर्तित करने में असहज महसूस करते हैं।

समय धीरे–धीरे आगे बढ़ता जा रहा है और आने वाला पल कैसा होगा ? इसकी गम्भीरता से हम कल्पना तक नहीं करते हैं और यही हमारे मानसिक कष्ट का मूल कारण भी है। प्रति वर्ष 365 दिनों के बाद नये वर्ष का आगमन होता है और इस नये वर्ष को हम सब पर्व की तरह मनाते हैं पर्वों का निमार्ण और इसको मनाने के पीछे जो भावना है वह यह है कि काम में लगा हुआ मनुष्य एकरसता का अनुभव करने लगता है जिससे कि जीवन में नीरसता आने लगती है और यही नीरसता कार्य को प्रभावित करती है, कार्य प्रभावित न हो, लोगों में अनुत्साह का भाव न हो इसलिए पर्वों को मनाने की परम्परा है। ऐसा देखा भी जाता है कि त्यौहारों और पर्वों पर व्यक्ति अपनी पीड़ा भूलकर उत्साह के साथ लोगों के साथ मिलकर त्यौहार का आनन्द लेता है और फिर अपने नियमित कार्यक्रम में व्यस्त हो जाता है, यह वह जीवनचक्र है जो अनवरत रूप से चलता चला आ रहा है और आगे भी चलता रहेगा, ऐसा हम लोगों को विश्वास है। इस वर्ष नये वर्ष के प्रथम पक्ष में हम इलेक्ट्रो होम्योपैथों ने एक नहीं दो–दो पर्व मनाये, पहला पर्व 4 जनवरी, 2017 को मनाया गया यह पर्व इसलिए मनाया जाता है कि वर्षों की मेहनत और कार्य के परिणाम स्वरूप प्रदेश सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए प्रथम शासनादेश जारी किया, इस शासनादेश के जारी होने का तात्पर्य यह है कि प्रदेश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी की चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान की सारी राहें खुल गयीं। निश्चित रूप से इस तरह के आदेश के हम सब वर्षों से प्रतीक्षारत थे।

40 साल की लम्बी प्रतीक्षा के बाद हमने यह सफ़लता प्राप्त की इसलिए यह तिथि समस्त इलेक्ट्रो होम्योपैथों के लिए महत्वपूर्ण तिथि है इसलिए इस तिथि को हम सब लोग किसी पर्व से कम नहीं मानते कम और ज़्यादा तो बाद की बात है यह तिथि हमारे लिए पर्व ही है। इसलिए प्रदेश के सारे इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक एकत्र होकर इस दिन को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं, दूसरा पर्व है 11 जनवरी का यह दिन भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना की आयुर्वेद के लिए धनवन्तरि जयन्ती। 11 जनवरी के दिन इलेक्ट्रो होम्योपैथी के जनक महात्मा काउण्ट सीज़र मैटी का जन्म हुआ था इसलिए इस दिन को विश्व का समूचा इलेक्ट्रो होम्योपैथ मैटी दिवस के रूप में उल्लास के साथ मनाता है। इस वर्ष भी इन दोनों पर्वों का आयोजन हुआ लोग जुड़े, पर्व भी मनाया परन्तु इस वर्ष हमें एक अलग चीज़ दृष्टिगोचर हुई, वह यह है कि आयोजनों में चिकित्सक तो जुड़े मनोयोग से, पर्व भी मनाया, परन्तु जो उत्साह होना चाहिये वह नज़र नहीं आ रहा था, यह उत्साह कहाँ गायब हो गया ?लोगों में नीरसता और अनुत्साह का भाव क्यों जन्म ले रहा है! यह समझ से परे है, पहले जब हम शासकीय संरक्षण की लड़ाई लड़ते थे, धरनों प्रर्दशनों एवं आन्दोलनों के माध्यम से सरकार को अपनी बात सुनाने का प्रयास करते थे, तब हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी के इन पर्वों को बहुत चाव से मनाते थे, उत्साह का आलम यह होता था कि जनवरी के पहले दिन से ही 11 जनवरी को मनाने की तैयारियां शुरू हो जाती थीं, एक दूसरे से अच्छा कार्यक्रम मनाने की होड़ रहती थी, हर आयोजक एक दूसरे से आगे निकल जाने का प्रयास करता था, वक्ताओं के अन्दर उत्साह होता था, उनकी वांणी में ओज होता था और जो हमारे प्रेरक तत्व थे वह भी उत्साह से भरपूर हुआ करते थे। अगले दिन किस कार्यक्रम को अखबारों ने छापा, किसको कितना स्थान मिला इसपर चर्चा होती थी, लोग यह बताकर प्रसन्न होते थे कि हमारा कार्यक्रम इतने समाचार पत्रों में स्थान पाने में सफ़ल रहा। बधाईयों का तांता लगा रहता था, परन्तु कल और आज में बहुत फ़र्क आ गया है। अ ब जब हमें शासकीय संरक्षण प्राप्त है, काम करने के अधिकार हैं, तब इतनी निराशा क्यों ?यह एक ऐसा प्रश्न है जिसका उत्तर उन सभी वरिष्ठ लोगों को ढूंढ़ना होगा जिनकी अगुवाई में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन चलाया गया और आगे भी चलाया जा रहा है, यह अजीब गति हमने सिर्फ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी में ही देखी जहाँ पाने की लालसा में उत्साह और पाकर निराशा है।

यह वातावरण क्यों निर्मित हो रहा है ?इसपर गम्भीर विचार की आवश्यकता है, क्योंकि चिकित्सक किसी भी चिकित्सा विधा की रीढ़ होती है, यदि रीढ़ ही कमज़ोर हो जाये तो शरीर के ढांचे का क्या होगा ?यह कल्पनीय है ! यह निराशा क्यों आ रही है ?धीरे– धीरे यह निराशा गम्भीर बीमारी का स्वरूप लेती जा रही है जो इसके लक्षण हैं वह कहीं से भी अच्छे नहीं लगते, जिन साथियों ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आन्दोलन में लगा दिये और जो कुछ पाने के लिए संघर्षरत रहे, वह उसे पाकर इतने उदास क्यों ? इस विषय पर जब हम विचार करते हैं तो कुछ बातें सामने आती हैं उसमें प्रमुख बात यह है कि आन्दोलन में यदि रूकावट आती है तो अनुत्साह का भाव जन्म ले ही लेता है। वर्ष 2003 तक आन्दोलन की गति चरम पर थी परन्तु 2003 के भारत सरकार के एक मात्र आदेश ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की कमर ही तोड़ कर रख दी।

एक तरफ़ सरकारी आदेश दूसरी तरफ़ न्यायालय के निर्देश का अनुपालन, इन दोनों ही परिस्थितियों में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालकों को परास्ज कर दिया, परिणाम यह हुआ कि लगभग 8 वर्ष तक पूरे देश में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का आन्दोलन थम सा गया, जो कल तक बहुत वेग के साथ लगे रहते थे उनके मन में यह बात घर कर गयी कि शायद अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी का कुछ नहीं होना ! सामान्य चिकित्सकों की क्या बात करें, जो संस्था संचालक थे उन्होंने ने भी आन्दोलन से दूर रहना उचित समझा परस्पर संवाद तक बन्द हो गये, संवादहीनता की स्थिति यह हो गयी कि किसी को किसी की गतिविधि के बारे में जानकारी तक नहीं होती थी और एक शून्यता का वातावरण निर्मित हो गया जब परस्पर चर्चा नहीं होती तो निराश होना स्वाभाविक ही है। इस शून्यता का परिणाम यह हुआ कि चिकित्सकों को लगा कि उनके साथ छल हुआ है संस्थाओं ने उनके साथ गंभीर धोखा किया है, भविष्य से खिलवाड़ हुआ है, और उन्ही सब विचारों ने आम इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सकों के मध्य अविश्वास का भाव पैदा कर दिया और इसी अविश्वासनीयता से निराशा के भाव ने जन्म ले लिया, परिणामतः जो भी कुछ है वह हमारे सामने है लेकिन परिस्थितियों से हारना या परिस्थितियों से समझौता करना स्वभाव नही होना चाहिये बल्कि परिस्थितियों से डटकर मुकाबला करते हुए परिस्थितियों को अपने अनुरूप निर्मित करने का प्रयास करना होगा। यह जो भी निराशा है वह क्षणिक है अगर निराशा के मूलकारणों पर प्रहार करें तो बहुत ही जल्दी दूर हो सकती है, सबसे पहले हमें अपने चिकित्सकों को इस बात के लिए शिक्षित करना होगा कि आपको कार्य करने का अधिकार प्राप्त है, अन्य चिकित्सा पद्धतियों की तरह इलेक्ट्रो होम्योपैथी के चिकित्सकों को भी चिकित्सा व्यवसाय करने का पूर्ण वैधानिक अधिकार है, अन्य चिकित्सा पद्धतियों की तरह आपको भी शासकीय संरक्षण प्राप्त है, अगर कार्य किया जाये तो भविष्य में शासकीय सेवाओं की भी सम्भावनायें हैं। दूसरा यह समझाने का प्रयास करें कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी विधा में सब रोगों की चिकित्सा सम्भव है अक्सर हमारे चिकित्सक दूसरी विधा चिकित्सा व्यवसाय के लिए प्रयोग कर लेते हैं जो कि उचित नहीं है और जब उन्हें समझाया जाता है कि ऐसा मत करो तो वह प्रतिउत्तर में कहते हैं कि हमें भी कमाना है, मीठी गोलियों में लोग पैसा नहीं देते हैं उनके मन से यह भाव निकालना होगा तथा ऐसे उदाहरण प्रस्तुत करने होंगे जहाँ पर हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ धन और यश दोनों इलेक्ट्रो होम्योपैथी से ही अर्जित कर रहे हैं, गम्भीर बीमारियों पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की पकड़ बहुत मज़बूत है और परिणाम भी अच्छे देते हैं जो चिकित्सक कैंसर, एडस, दमा, कुष्ठ, तपेदिक जैसी गम्भीर बीमारियों पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की ही औषधियों को प्रयोग में लाते हैं उन्हें आशातीत सफ़लता भी प्राप्त होती है, इससे उन चिकित्सकों को धन और यश दोनों भरपूर मिलते हैं। बस ज़रूरत है तो आत्म विश्वास के साथ कार्य करने की, जब विश्वास डगमगता है तो अच्छे परिणामों की अपेक्षा नहीं करनी चाहिये, हमें प्रेरणा लेनी चाहिये बिहार के उन चिकित्सकों से जिन्होंने कैंसर और गम्भीर बीमारियों का इलाज कर इलेक्ट्रो होम्योपैथी के साथ–साथ अपना भी भला किया।

यदि यह विचार हमारे चिकित्सक स्वीकार कर लें तो निराशा दूर–दूर तक नज़र नहीं आयेगी। एक बात और है कि हम चिकित्सकों को अपने पराये की भावना से ऊपर उठकर सिर्फ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथी की बात करें, गुटबन्दी और ख़ेमेबन्दी से किसी का भला नहीं होना है, विकास के लिए सामुहिक प्रयास करने पड़ते हैं और तभी परिणाम भी आते हैं, कुछ कमियां हैं जिन्हें हम सबको मिलकर दूर करना होगा जैसे एक दूसरे के प्रति अविश्वास का भाव खत्म होना चाहिये, श्रद्धा और विश्वास परस्पर सामजस्य हैं यही विकास की पहली सीढ़ी है, सीढ़ी पर चढ़ने के लिए आगे पैर बढ़ाना ही होगा।

चिकित्सा विधा हर वर्ग के लिए होती है उसके लिए अभिजात्य या सर्वहारा नहीं होता है, यह अलग बात है कि जो अभिजात्य होते हैं उन्हें कुपोषण जैसी बीमारियां नहीं होती हैं परन्तु अन्य बीमारियां समान्य रूप से सब पर प्रभाव डालती हैं, हमारे कुछ चिकित्सकों का यह भाव रहता है कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी का प्रचार गरीब या मलिन बस्ती में होना चाहिये इसकी डिस्पेंसरियां ऐसी ही आबादी में हों। सेवा भाव से तो यह विचार ठीक है परन्तु विकास के लिए इस मत में परिवर्तन की आवश्यकता है। समय बताता है कि बड़े लोग जो करते हैं छोटे लोग उसका अनुसरण करते हैं जैसे पहले बड़े लोगों में शादी विवाह के लिए खुले बगीचे, लॉन प्रारम्भ किये, उसमें आयोजन किया, देखते ही देखते यह समाज की परम्परा हो गयी, कहने का मतलब यह है कि गरीबों व जरूरतमन्दों की सेवा के साथ–साथ विकास की भी बात होनी चाहिये इसलिए हमारे चिकित्सकों को ऐसे लोगों का इलाज भी करना चाहिये जो मध्यम वर्ग से जुड़ते हैं इससे चिकित्सा पद्धति का प्रचार होता है, वह समाज में बताते हैं कि हमने इलेक्ट्रो होम्योपैथी विधा व्यवहार में लायी और हमें उससे लाभ मिला।

जब इस तरह की गतिविधियां हम सब द्वारा संचालित की जायेंगी तो निराशा दूर–दूर तक नज़र नहीं आयेगी और जिस उत्साह की कमी है उसकी पूर्ति भी होगी क्योंकि उत्साह से किया हुआ कार्य सदैव सकारात्मक और अच्छे परिणाम ही देता है।

वर्तमान परिस्थिति में उत्साह और कार्य की आवश्यकता है इन्हीं दोनों के समिश्रण से हम विकास की नई इबारत लिख सकेंगे और जो परस्पर संवाद हीनता है उसपर विराम लगेगा।

पूरे देश में हर्ष से मनाया गया मैटी दिवस

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के आविष्कारक डा0 काउण्ट सीजर मैटी का 208 वीं जयन्ती समारोह पूरे देश में हर्षोल्लास से मनाये जाने के समाचार प्राप्त हुए हैं लगभग सभी प्रान्तों में मैटी के जन्मदिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश के लगभग सभी जनपदों में यह कार्यक्रम उत्साह के साथ आयोजित किया गया परन्तु कुछ राज्य ऐसे भी हैं जहां पर एक बड़ा कार्यक्रम किसी बड़े शहर में आयोजित किया। मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में प्रदेश के समस्त इलेक्ट्रो होम्योपैथों द्वारा वैकल्पिक चिकित्सक संघ के बैनर तले एक वृहद कार्यक्रम का आयोजन किया गया इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से डा0 के0 के0 पाठक, डा0 अभिमन्यु सिंह और कार्यक्रम की अध्यक्षता डा0 प्रमोद शुक्ला ने की। इसी तरह एक बड़ा कार्यक्रम महाराष्ट्र की राजधानी मुम्बई में भी आयोजित हुआ इस कार्यक्रम में डा0 पी0 एस0 पाण्डेय, डा0 डी0 के0 पाल एवं डा0 पी0 के0 सिंह प्रमुख रूप थे। झारखण्ड राज्य के डा0 एस0 हक द्वारा भी मैटी दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। उत्तराखण्ड में डा0 के0 पी0 चौहान की अगुवाई में भव्य मैटी दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। दिल्ली राज्य में भी कई स्थानों पर मैटी जन्मोत्सव समारोह मनाया गया जिसमें डा0 देवेन्द्र कुमार प्रमुख रूप से शामिल रहे। बिहार राज्य में भी मैटी दिवस के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये डा0 प्रभात श्रीवास्तव ने भी कार्यक्रम आयोजित किये जाने की सूचना दी। हिमांचल प्रदेश में चम्बा में एक आकर्षक कार्यक्रम आयोजित किया गया। छत्तीसगढ़ में सफदरी व जगदलपुर में कार्यक्रम आयोजित किये जाने की सूचना प्राप्त हुई है, पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में डा0 ए0 पी0 मौर्या द्वारा मैटी दिवस आयोजित होने की सूचना प्राप्त हुई है। मैटी दिवस का कार्यक्रम गुजरात राज्य के अहमदाबाद जनपद में धूम-धाम से मनाया गया, आसाम से भी मैटी दिवस मनाने की सूचनायें प्राप्त हुई हैं। कर्नाटक के बंगलौर में और आन्ध्र के हैदराबाद तथा तमिलनाडु राज्य के मदुरई में मैटी दिवस कार्यक्रम आयोजित किये जाने की सूचनायें हैं। अब उत्तर प्रदेश राज्य की बात करें तो 11 जनवरी का दिन पूरे राज्य में मैटीमय हो रहा था जनपद स्तर से लेकर तहसील और ब्लाक स्तर पर मैटी दिवस के भव्य कार्यक्रम आयोजित हुए। कानपुर नगर में आयोजित कार्यक्रम के समाचार पिछले अंक में आप तक प्रेषित थे। कानपुर से सटे हुए उन्नाव जिले में मैटी दिवस का कार्यक्रम डा0 संजय पाण्डेय व गौरव द्विवेदी द्वारा आयोजित किये गये। जनपद रायबरेली में आशीष इलेक्ट्रो होम्योपैथी मेडिकल इन्स्टीट्यूट छजलापुर, मैटी दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया इस कार्यक्रम में डा0 पी0 एन0 कुशवाहा डा0 रमेश द्विवेदी, डा0 त्रिलोक सिंह,डा0 छोटे लाल, रामसजीवन, दयाराम,कालीशंकर शर्मा, विमलेश कुमार, राम आसरे सत्यपाल वर्मा, राम विलास मौर्य, सुनील कुमार मौर्य आदि प्रमुखता से उपस्थित रहे, प्रदेश की राजधानी लखनऊ के अक्ष इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्स्टीट्यूट में मैटी दिवस कार्यक्रम डा0 आर0 के0 कपूर व डा0 आशीष कपूर के अगुवाई में मनाया गया, लखीमपुर के माँ सन्तु देवी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्स्टीट्यूट में मैटी दिवस का कार्यक्रम डा0 आर0 के0 शर्मा के नेतृत्व में कार्यक्रम आयोजित किया गया, गोरखपुर में डा0 एस0 के0 पाठक व देवरिया में डा0 पी0 के0 श्रीवास्तव द्वारा मैटी जन्मोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया, जनपद महाराजगंज में धनपत लाल मेमोरियल मेडिकल स्टडी सेन्टर ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथी में भी एक भव्य आयोजन किया गया, सिद्धार्थनगर नगर में ईश्वर देवी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्स्टीट्यूट के प्राचार्य डा0 वेद प्रकाश श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया, प्रतापगढ़ में इन्दिरा गाँधी इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्स्टीट्यूट के प्राचार्य डा0 एम0 ए0 इदरीसी द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इसी प्रकार के अनेक कार्यक्रम जनपद गोण्डा में शुभम शर्मा द्वारा बहराइच में डा0 भूपराज श्रीवास्तव, बाराबंकी के किन्तूर में डा0 हबीब-उर-रहमान, हरदोई में डा0 प्रमोद गुप्ता, इटावा में डा0 इकलाक अहमद, फिरोजाबाद में डा0 इसरार अहमद, अलीगढ़ में डा0 पी0 के0 यादव व डा0 आर0 के0 टेवतिया द्वारा मैटी दिवस का भव्य एवं आकर्षक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसी तरह जनपद हमीरपुर में एक बड़ा कार्यक्रम डा0 नरेन्द्र भूषण व डा0 सरवन कुमार चक्रवर्ती द्वारा आयोजित किया गया। जनपद महोबा में डा0 शिव शंकर अवस्थी द्वारा मैटी दिवस का कार्यक्रम आयोजित करने की सूचना प्राप्त हुई है।

सी0 के0 ई0 एच0 मेडिकल इन्स्टीट्यूट हमीरपुर, उ0प्र0 में डा0 प्रमोद शंकर बाजपेई व अन्य।

जिज्ञासुओं के लिए शुभ उपहार

कनीनिका विज्ञान आइरिस विज्ञान की
एक मात्र पुस्तक
Iris Diagnosis
136 Page की
यह बहुमूल्य पुस्तक नेट मूल्य मात्र ₹ 40 में
डाक खर्च अतिरिक्त पर उपलब्ध है
सम्पर्क करें
इलेक्ट्रो होम्योपैथिक केन्द्र
बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन,उ0प्र0
127 / 204 एस जूही, कानपुर–208014